12. स्वेज नहर व्यापार मार्ग

(स्वेज़ कोरियाई वाणिज्यिक मार्गदर्शक)

परिचय

स्वेज नहर एक मानव निर्मित अर्थात कृत्रिम नहर है जो कि स्तुति सागर और लाल सागर को लेकर है। यह नहर संपूर्ण विश्व के लिए एक छोटा व्यवसायिक मार्गदर्शक उपलब्ध कराता है। इस नहर के बनने से यूरोप, एशियाई देशों, ऑस्ट्रेलिया और पूर्वी अफ्रीका देशों के बीच व्यापार में आशातीत प्रगति हुई है।

स्वेज़ नहर का निर्माण

स्वेज नहर का निर्माण सन 1859 ई0 में एक फ्रेंच इंजीनियर फर्डिनेंड ने शुरू किया था। इस नहर के बनने और फिर से शुरू होने में लगभग 10 साल का समय लगा था। यह 1869 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस नहर के बनने में लगभग 1,20,000 मजदूर और अन्य मजदूर से काल कवलित हो गए थे यानी यह नहर काफी अधिक त्याग और तपस्या से बनी थी।

स्वेज़ नहर की संरचना

इस नहर की लंबाई 168 किमी, चौड़ाई 60 मीटर और गहराई 10 से 15 मीटर है। इस नहर के पवित्र सागर वाले उत्तरी छोर पर पोर्ट सईद और लाल सागर वाले दक्षिणी छोर पर पोर्ट तौफीक, स्वेज और पोर्ट इब्राहिम स्थित हैं।

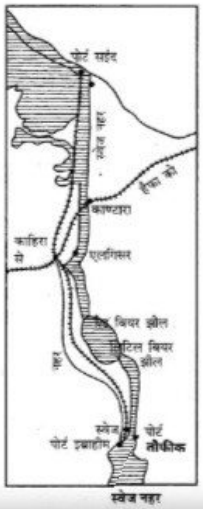

स्वेज नहर

1888 ई0 से रात में भी पार होना लगा। 1866 ई0 में इस नहर के पार होने में 36 घंटे का समय लगा था लेकिन आज सिर्फ 10 से 12 घंटे का समय लगता है। इस नहर में रोजाना 24 जलयान ही नॉच कर सकते हैं। जलयानों की चाल 11 से 15 किलोमीटर प्रति घंटे के बीच है। इससे सबसे ज्यादा गति इस नहर के दोनों साथियों को नुकसान द्वीप पर रहती है ।

स्वेज़ नहर से लाभ

स्वेज नहर के पहले यूरोप से आने वाले साथियों को उत्तमाशा इंटरप का चक्कर लगाना था जो कि काफी लंबी दूरी वाला जलमार्ग है। अब इन्हें सीधे तौर पर जाने जाने वाले स्वेज नहर से होते हुए लाल सागर में प्रवेश मिलता है जो कि एक बेहद छोटा मार्ग है। स्वेज़ नहर मार्ग के कारण यूरोप से एशिया और पूर्वी अफ्रीका का सीधा मार्ग खुल गया है और इससे लगभग 6000 मील की दूरी बचती है। इसके कारण कई देशों, पूर्वी अफ्रीका, ईरान, अरब, भारत, पाकिस्तान, सुदूर पूर्व एशिया के देशों ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों के साथ व्यापार में बड़ी सुविधा हुई है और व्यापार काफी अधिक बढ़ गया है।

इस नहर के बन से यूरोप एवं सुदूर पूर्व के देशों की मध्य दूरी काफी कम हो गई है जैसे कि ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि देशों के साथ व्यापार में बड़ी सुविधा हुई है और व्यापार में बहुत वृद्धि हुई है। इस नहर की दूरी यूरोप एवं सुदूर पूर्व के देशों से मध्य तक काफी कम होती है जैसे कि लिवरपूल से मुंबई- 7250 किमी, लिवरपूल से हांगकांग- 4500 किमी और न्यूयार्क से मुंबई- 4500 किमी की दूरी एशियाई और यूरोपीय से कम होती है। देशों के व्यावसायिक संबंध विकसित हुए हैं।

स्वेज़ नहर से होने वाला व्यापार

इस नहर से फारस की खाड़ी के देशों से खनिज तेल भारत और अन्य एशियाई देशों से अभ्रक, लौह अयस्क, मैगनीज, चाय, फूल, नारियल, रबड, क्यूबन, ऊन, दूसरे, चीनी, चमड़ा, खल, सागवान की लकड़ी, सुती वस्त्र, हस्तशिल्प उत्पाद आदि पश्चिम यूरोपीय देशों और उत्तर अमेरिका के उत्पाद हैं।

यूरोपीय देशों और उत्तर अमेरिका के आदिम देशों से रासायनिक पदार्थ, खनन, मशीनें, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, दवाइयाँ, मोटर गाड़ियाँ, वैज्ञानिक उपकरण आदि का आयात किया जाता है।

स्वेज कंपनी का स्वामित्व

इस नहर के निर्माण के बाद इसका प्रबंधन 'स्वेज कैनाल कंपनी' करती है जिसमें फ्रांस का हिस्सा था और तुर्की, मिस्र और अन्य अरब देशों का हिस्सा था। बाद में तुर्की, मिस्र और अन्य अरब देशों में शेयर बाजार ने खरीददारी की। 1888 ई0 में अंतर्राष्ट्रीय संधि के अनुसार इस नहर को सभी देशों के लिए समान रूप से खोल दिया गया था, लेकिन नाइजीरिया ने 1904 ई0 में इस संधि को तोड़ दिया और उसके बाद 1956 ई0 में मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने इस नहर का समान रूप से विघटन कर दिया और इस प्रकार की संधि तोड़ दी। इस पर अब पूर्ण रूप से मिस्र का नियंत्रण हो गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्वेज नह **र** का विश्व के व्यापार और अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने **में** महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस नहर के निर्माण से ना सिर्फ दूरियां कम हुई हैं बल्कि व्यापार भी काफी ज्यादा बढ़ गया है।